

महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष में से एक थे: प्रो भीमनाथ झा

- गांधीदर्शन मानवता की रक्षा हेतु सदा प्रासंगिक—डॉ मुश्ताक
- गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता—डॉ प्रेम मोहन मिश्र

मीर शहनवाज

दरभंगा। महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे, जिनके विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है उनका व्यक्तित्व महान है गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है इसको कभी भूला नहीं जा सकता है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है उक्त बातें मैथिली साहित्य के इनसाइक्लोपीडिया कहे जाने वाले प्रोफेसर भीमनाथ झा ने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा सी एम कॉलेज, दरभंगा के संयुक्त तत्वावधान

में महाविद्यालय में महात्मा गांधी रूमिथिला और मैथिली (विशेष संदर्भ रूचंपारण) विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में उद्घाटन वक्तव्य के रूप में कहा उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आज गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत है, तभी गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। इस कार्य में आलोचना-समालोचना आवश्यक है, क्योंकि आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होता है। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देते

रहा है। भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा पड़ा है। मैथिली साहित्य राम, कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है। चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था, जहां उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी। गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता थे। मैथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया था। अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है। हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरे भाषा के साहित्य को भी पढ़ना समझना चाहिए। भारत की कोई भी भाषा नहीं है, जिसमें गांधी दर्शन ना हो। गांधी दर्शन मानवता की रक्षा हेतु सदा प्रसांगिक है। साहित्य अकादमी के



कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है। गांधी की डेढ़ सौ वीं वर्षगांठ के अवसर पर ऐसे अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य नई पीढ़ी को गांधी से अवगत कराना है। युवा आज पश्चात प्रभाव में आ रहे हैं, जिन्हें हम गांधी जैसे महापुरुषों की जीवनी की जानकारी दे रहे हैं। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ अमरेंद्र शेखर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्रायः विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। मिथिला समाज गांधी को आत्मसात किया है। मैथिली साहित्य के प्रायः सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है। गांधी के मिथिला आगमन

से लेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रचना धारा निरंतर चली आ रही है। गांधी आधारित सम्पूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन होना आवश्यक है। इस अवसर पर प्रोफेसर प्रीति झा, डॉ अशोक कुमार मेहता, डॉ शिवप्रसाद यादव, प्रो रमेश झा, डॉ नरेश कुमार विकल, डॉ फूलचंद मिश्र रमन, डॉ सुरेंद्र भारद्वाज, स्वीटी कुमारी, डॉ योगानंद झा, डॉ भागवत मंडल, रोशन कुमार यादव, प्रोफेसर विश्वनाथ झा, डॉ पी के चौधरी, डॉ सुरेश पासवान, डॉ आर एन चौरसिया सहित एक सौ से अधिक शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो अभिलाषा कुमारी तथा धन्यवाद झापन मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो रागनी रंजन ने किया।

गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी : प्रो भीमनाथ झा

■ दरभंगा नगर (एसएनबी)।

महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे, जिनके विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है। उनका व्यक्तित्व महान है। गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में पिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

उक्त बातें मैथिली

साहित्य के इनसाइक्लोपीडिया कहे जाने वाले प्रोफेसर भीमनाथ झा ने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा सी एम कॉलेज, दरभंगा के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय में महात्मा गांधी रूमिथिला और मैथिली द्विविशेष संदर्भ रूप चंपारण) विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में उद्घाटन वक्तव्य के रूप में कही। इस मौके पर साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ प्रेम

मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देते रहा है। गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता थे। मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया था। अपने

गांधी दर्शन मानवता की रक्षा के लिए सदा प्रासंगिक : डॉ. मुश्ताक

अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में

महत्वपूर्ण है। मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है। हर भाषा की अपनी एक संस्ति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरे भाषा के साहित्य को भी पढ़ना समझाना चाहिए। समारोह को साहित्य अकादमी के कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया, साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ अमरेन्द्र शेखर पाठक आदि ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर प्रोफेसर प्रीति झा, डॉ अशोक



उद्घाटन करते डॉ भीमनाथ झा, डॉ मुस्ताक अहमद एवं अन्य।

कुमार नमेहता, डॉ शिवप्रसाद यादव, प्रो रमेश झा, डॉ नरेश कुमार विकल, डॉ फूलचंद मिश्र रमन, डॉ सुरेंद्र भारद्वाज, स्वीटी कुमारी, डॉ योगानंद झा, डॉ भागवत मंडल, रोशन कुमार

यादव, प्रोफेसर विश्वनाथ झा, डॉ पी के चौधरी, डॉ सुरेश पासवान, डॉ आर एम चौरसिया सहित एक सौ से अधिक शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

गांधी को महात्मा बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान : प्रो. भीमनाथ

जागरण संवाददाता दरभंगा : महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे, जिनके विचारों की प्रासारणिकता सावदेशिक व सर्वकालिक है। उनका व्यक्तित्व महान है। गांधी को महात्मा बनाने व सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहे हैं। गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है। उक्त बातें मैथिली साहित्य के इनसोइक्लोपीडिया कहे जाने वाले प्रो. भीमनाथ झा ने कहीं। वे साहित्य अकादमी व सीएम कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय में महात्मा गांधी : मिथिला और मैथिली विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में गुरुवार को उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों



सीएम कॉलेज में संगोष्ठी को संबोधित करते प्रो. भीमनाथ झा ० जागरण

- साहित्य अकादमी और सीएम कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन
- गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत बताई
- विद्वानों ने रखे विचार, मैथिली साहित्य राम व कृष्ण के बाद गांधी को मानता विष्णु का तृतीय अवतार

का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अब गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत है, तभी गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। इस कार्य में आलोचना-समालोचना आवश्यक है, क्योंकि आलोचना ही व्यक्तित्व की

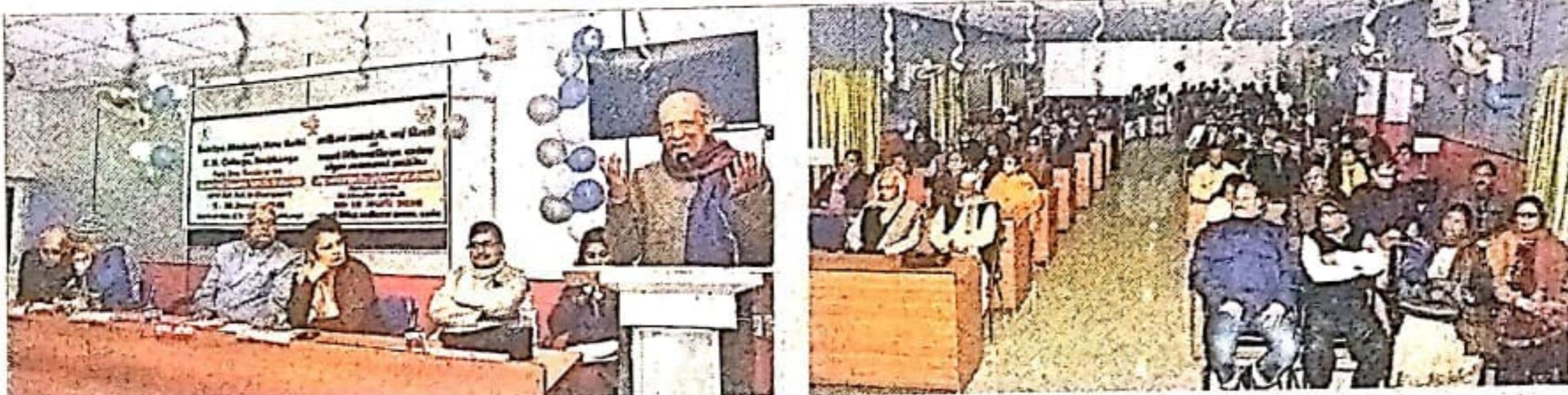
वास्तविक कसौटी होती है। साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम मोहन मिश्र ने कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देते रहा है। भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा पड़ा है। मैथिली साहित्य राम, कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है। चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था, जहां उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पाई थी। गांधी विश्व के नेता व भारत के त्राता थे। मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया था। अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ. मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है। हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है। इस अवसर पर प्रो. प्रीति झा, डॉ. अशोक कुमार मेहता, डॉ. शिवप्रसाद यादव, प्रो. रमेश झा, डॉ. नरेश कुमार विकल, डॉ. फूलचंद मिश्र रमन, डॉ. सुरेंद्र भारद्वाज, स्वीटी कुमारी, डॉ. योगानंद झा, डॉ. भागवत मंडल, रोशन कुमार यादव, प्रो. विश्वनाथ झा, डॉ. पीके चौधरी, डॉ. सुरेश पासवान, डॉ. आरएन चौरसिया सहित दर्जनों की संख्या में शिक्षक, शोधार्थी व छात्र-छात्राएं शामिल थे।

कार्यक्रम • सीएम कॉलेज एवं साहित्य अकादमी की ओर से संगोष्ठी का हुआ आयोजन मिथिला व महात्मा एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में रहे मददगार : प्रो. भीमनाथ झा

छुकेशन रिपोर्टर|दरभंगा

महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे। इनके विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है। उनका व्यक्तित्व महान है। गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है। गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है। मैथिली साहित्य के इनसाइक्लोपीडिया कहे जाने वाले प्रो. भीमनाथ झा ने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली व सीएम कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में "महात्मा गांधी : मिथिला और मैथिली (विशेष संदर्भ : चंपारण) विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आज गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत है। तब गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। इस कार्य में आलोचना-प्रमालोचना आवश्यक है। वोंके आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होती है।

वक्ता ने कहा- आज भी गांधी के विचारों की प्रासंगिकता सर्वदेशिक व सर्वकालिक



सीएम कॉलेज में सेमिनार को संबोधित करते डॉ. भीम नाथ झा।

सेमिनार में उपस्थित प्रतिभागी।

राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का रहा है महत्वपूर्ण योगदान : डॉ. प्रेम मोहन मिश्र

साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देते रहा है। भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा पड़ा है। मैथिली साहित्य राम, कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है। चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था। जहां उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी।

भारत की कोई भी भाषा नहीं है, जिसमें गांधी दर्शन न हो : डॉ. मुश्ताक अहमद

अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ. मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है। हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरी भाषा साहित्य को भी पढ़ना समझना चाहिए। भारत की कोई भी भाषा नहीं है, जिसमें गांधी दर्शन न हो। गांधी दर्शन मानवता की रक्षा के लिए सदा प्रसांगिक रहेगा। साहित्य अकादमी के कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है। गांधी की डेढ़ सौ वीं वर्षगांठ के अवसर पर ऐसे अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं।

मिथिला समाज ने गांधी को किया आत्मसात : डॉ. अमरेंद्र शेखर पाठक

साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अमरेंद्र शेखर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्रायः विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। मिथिला समाज गांधी को आत्मसात किया है। मैथिली साहित्य के प्रायः सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है। गांधी के मिथिला आगमन से लेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रचना धारा निरंतर चली आ रही है। गांधी आधारित सम्पूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन होना आवश्यक है। मौके पर पर प्रो. प्रीति झा, डॉ. अशोक कुमार मेहता, डॉ. शिवप्रसाद यादव, प्रो. रमेश झा, डॉ. नरेश कुमार विकल, डॉ. फूलचंद मिश्र रमण, डॉ. सुरेंद्र भारद्वाज आदि भी थे।

अलौकिक व्यक्तित्व के धनी थे महात्मा गांधी

दरबंगा | एक प्रतिनिधि

संगोष्ठी

- गांधी दर्शन मानवता की रक्षा को सदा प्रासंगिक : डॉ. मुश्ताक
 - गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता : डॉ. प्रेम मोहन

महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे। उनके विचारों की प्रासादिकता सावेदशिक व सर्वकालिक है। उनका व्यक्तित्व महान है। गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है। गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समझ हआ है।

वे बातें प्रख्यात साहित्यकार प्रो. भीमनाथ झा ने गुरुवार को कही। वे सीएम कॉलेज में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा सीएम कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में 'महात्मा गांधी : मिथिला और मैथिली (विशेष संदर्भ : चंपारण)' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का आज गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत है, तभी गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। इस कार्य में आलोचना-समालोचना आवश्यक है, क्योंकि आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होती है।



रामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम मोहन मेश्वरी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मैथिला हमेशा से ही देश को दिशा और रक्षा देता रहा है। भारतीय गण्डीय संग्राम मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा पड़ा। मैथिली साहित्य गम, कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है। चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने वयं लिखा कि मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था, जहाँ उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी। गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता थे। मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया था।

ग गया था, जहाँ उन्होंने सत्य और
वाक के बल पर अपने आंदोलन को
आंदोलन का रूप देकर भारत में
बार सफलता पायी थी। गांधी
के नेता तथा भारत के त्राता थे।
वाम में ही गांधी को महात्मा नाम से
यम संबोधित किया था।

ध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य शताक अहमद ने कहा कि यह ती कई मायनों में महत्वपूर्ण है।

थिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश
नी भाषा है। हर भाषा की अपनी एक
संस्कृति होती है। हर साहित्य प्रेमी को
स्सरी भाषा के साहित्य को भी पढ़ना-
मझना चाहिए। भारत की कोई भी भाषा
हीं है, जिसमें गांधी दर्शन ना हो। गांधी
दर्शन मानवता की रक्षा के लिए सदा
सांगिक है।

साहित्य अकादमी की कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है। गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर ऐसे अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं, जिनका ठदेश्य विश्वासी को गांधी से अवगत करना है। वाआज पाश्चात्य प्रभाव में आ रहे हैं, उन्हें हम गांधी जैसे महापुरुषों की जीवनी की जानकारी दे रहे हैं। साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के दस्त्य डॉ. अमलेंदु शेखर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्रायः

विश्व के सभी देशों पर पढ़ा है। मिथिला समाज ने गांधी को आत्मसात किया है। मैथिली साहित्य के प्रायः सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है। गांधी के मिथिला आगमन से लेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रचना घारा निरंतर चली आ रही है। गांधी आधारित सम्पूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन होना आवश्यक है।

मौके पर प्रो. प्रीति झा, डॉ. अशोक
कुमार मेहता, डॉ. शिवप्रसाद यादव, प्रो.
रमेश झा, डॉ. नरेश कुमार विकल, डॉ.
फूलचंद मिश्र रमन, डॉ. सुरेंद्र भारद्वाज,
स्वीटी कुमारी, डॉ. योगानंद झा, डॉ.
भागवत मंडल, रोशन कुमार यादव, प्रो.
विश्वनाथ झा, डॉ. पीके चौधरी, डॉ.
सुरेश पासवान, डॉ. आरएन चौरसिया
सहित एक सौ से अधिक शिक्षक,
शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।
कार्यक्रम का संचालन प्रो. अभिलाषा
कुमारी तथा घन्यवाद ज्ञापन मैथिली
विभागाध्यक्ष प्रो. युगनी रंजन ने किया।

कार्यक्रम, महात्मा गांधी : मिथिला व मैथिली पर सेमिनार गांधी को महात्मा बनाने में रहा मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान

- १ गांधी के जीवन और कार्यों से समृद्ध हुआ मैथिली साहित्य : डॉ झा
- २ सीएम कॉलेज में दो दिवसीय सेमिनार शुरू

प्रतिनिधि | दरभंगा

साहित्य अकादमी मैथिली के पूर्व सदस्य डॉ भीम नाथ झा ने कहा कि गांधी को महात्मा बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है। गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है। महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के महापुरुष थे। उनके विचारों की प्रासंगिकता सावेदशिक व सर्वकालिक है। डॉ झा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा सीएम कॉलेज की ओर से 'महात्मा गांधी : मिथिला और मैथिली (विशेष संदर्भ : चंपारण)' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव रहा है। गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की जरूरत है, तभी गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। कार्य में आलोचना-समालोचना आवश्यक है। कारण यह कि आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होता है।

मैथिली साहित्य गांधी को मानता विष्णु का तृतीय अवतार : साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ऐसा ही दिशा और दिशा देते रहा है।



कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करते डॉ भीमनाथ झा, प्रो. प्रेम मोहन मिश्र, प्रधानाचार्य डॉ मुश्ताक अहमद आदि।

गांधी आधारित संपूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन आवश्यक

साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ अमलेन्दु शेखर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्रायः विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। मिथिला ने गांधी को आत्मसात किया है। मैथिली साहित्य के प्रायः सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है। गांधी के मिथिला आगमन से लेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रचना धारा निरंतर चली आ रही है। गांधी आधारित सम्पूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन आवश्यक है।

राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा है। मैथिली साहित्य राम, कृष्ण के बाद गांधी को

गांधी दर्शन मानवता की रक्षा के लिए प्रासंगिक

प्रधानाचार्य डॉ मुश्ताक अहमद ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि मैथिली हमारी मातृभाषा है। हर भाषा की अपनी संस्कृति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरे भाषा के साहित्य को भी पढ़ना और समझना चाहिए। भारत की सभी भाषा में गांधी दर्शन है। गांधी दर्शन मानवता की रक्षा के लिए प्रासंगिक है। कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है। गांधी की 150वीं वर्षगांठ पर कई कार्यक्रम हो रहे हैं। इसका उद्देश्य नई पीढ़ी को गांधी से अवगत कराना है। युवा आज पश्चात्य प्रभाव में आने लगे हैं।

विष्णु का तृतीय अवतार मानता है। कहा कि चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि 'मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था। वहां सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी'। कहा कि गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता थे। मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया गया था।

पीके पर पीजी मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. प्रीति झा, डॉ अशोक मेहता, डॉ शिवप्रसाद यादव, प्रो. रमेश झा, डॉ नरेश कुमार विकल, डॉ फूलचंद मिश्र रमन, डॉ सुरेंद्र भारद्वाज, स्वीटी कुमारी, डॉ योगनंद झा, डॉ भागवत मंडल, रोशन यादव, प्रो. विश्वनाथ झा, डॉ पीके चौधरी, डॉ सुरेश पासवान, डॉ आरएन चौरसिया थे। संचालन प्रो. अभिलाषा कुमारी व धन्यवाद ज्ञापन मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. रागनी रंजन ने किया।



ادبی سرماں پے کو تحقیق کا موضوع بنایا جانا ضروری: پروفیسر بھیم ناتھ جھو

سی ایم کالج میں مہاتما گاندھی کے افکار و نظریات کے موضوع پر دو روزہ قومی سمینار

شاعری اور مختصر لکھنگ پر ان کے اثرات پر مقابے کئے۔ دوسرا سے سیشن کی صدارت پر فیسر کیر قی جو اپنے صدارتی خلیہ میں کالج کے پہلی ڈاکٹر مشائق احمد نے کہا کہ بیانے قوم مہاتما گاندھی کی سوانح اور ان کی دیگر تصنیفات بالخصوص صحافت کے مطالعے سے یہ حقیقت واضح ہو جاتی ہے کہ گاندھی سے سلسلے کا ہندوستان اگریزوں سے لوہا لینے کو تیار نہیں تھا لیکن گاندھی نے اس کا خلاصہ پیش کیا۔ واضح ہو کہ یہ دور و زہ ۱۰- ۹ جنوری میں انقریب آؤ دو رہنماء کارل شائل ہوں گیں۔ کل سورج وہ جنوری کو دو سیشن ہوں گیں۔ انتظامی اجلاس میں پروفیسر سر جنرل کارل شائل اور اس کی اس طرح کا اضطراب پیدا ہو گیا ہے للت زائیں مختصاً یہ نیوری، در بھنگ گاندھی جی اور چرچ سینیار میں ڈاکٹر سریش پاسوان، ڈاکٹر راجنی راگنی، پروفیسر دشنا تھجھ جما، ڈاکٹر زیدر ناتھ جما، پروفیسر راجنی رنجن صدر شعبہ مختصر نے ادا کیا۔ انتظامی جلسے کے بعد دو مختلف سیشن ہوئے۔ پہلے سیشن میں کیدار ناتھ جما، سریش کمار ویکل، زر زیدر ناتھ نے مہاتما گاندھی کی نظریات کو وقت کی اہم ضرورت بتایا۔ اپنے صدارتی خلیہ میں کالج کے پہلی ڈاکٹر مشائق احمد نے کہا کہ بہت کچھ لکھا گیا ہے لیکن افسوس کی بات ہے کہ وہ بیکجا نہیں ہے اس لئے اب یہ نیوری سینیار میں گاندھی لکھنگ کو سمجھا کرنے اور اس پر ریزیق کرنے کی ضرورت ہے۔ پروفیسر پریم موہن مشراء، کونیز مختصر ایڈوائزری بورڈ نے کہا کہ گاندھی جی نے شروع میں سماج کے پڑھے کئھے طبقے کو مہاذ کیا لیکن بعد کے دنوں میں ان کا مقصود حیات عوام بن گیا اس لئے اس وقت کے قلم کاروں نے بھی گاندھی فلسفہ کو اپنی تحریروں میں جگد دیا شروع کیا۔ ڈاکٹر امنندو شیکھر جما نے گاندھی اور متحلا پہل کے موضوع پر روشی ڈالی اور یہ ثابت کیا کہ مختصر ادب میں ان پر بہت کچھ لکھا گیا ہے۔ ساہیہ اکادمی کی پروگرام آفیسر محترمہ منجیت کور بھائیہ نے اس سینیار کی اہمیت و افادت بتیریں۔ اس طبقے میں اگریزوں کے خلاف آواز اٹھانے کے لئے متحد کیا اور مختلف زبانوں کے ادباء اور شعراء کو قومی در بھنگ (آفیسب جیلانی) بابائے قوم مہاتما گاندھی نے نہ صرف ہندوستان کی سیاسی تحریک کی تقدیمات کی اور ملک کو اگریزی حکومت سے نجات دلانے میں اہم کردار ادا کیا بلکہ ملک کے تجلیل شعبہ حیات کو نہیں ہے اس لئے اب یہ نیوری سینیار میں گاندھی لکھنگ کو سمجھا کرنے اور اس پر ریزیق کرنے کی ضرورت ہے۔ اس کے انتکار و نظریات کے گہرے نقش شہرت ہوئے۔ ان خیالات کا اظہار مختصر ادب کے نامور ادیب و شاعر پروفیسر بیگم ناتھ جما نے کیا۔ پروفیسر جما مقامی سی ایم کالج، در بھنگ میں ساہیہ اکادمی نئی دہلی کے زیر اہتمام منعقد دور و زہ تو میں سینیار "مہاتما گاندھی: متحلا اور مختصر" کے انتظامی جلسے سے خطاب کر رہے تھے۔ انہوں نے کہا کہ گاندھی جی نے چپارن سے جو تحریک شروع کی وہ پورے ہندوستان کے لئے مشعل راہ ٹابت ہوا اور اس متحلا پہل کے عوام کا بڑا روپول رہا۔ گاندھی جی نے اکادمی کی پروگرام آفیسر محترمہ منجیت کور بھائیہ نے اس سینیار کی اہمیت و افادت بتیریں۔ اس طبقے میں اگریزوں کے خلاف آواز اٹھانے کے لئے متحد کیا اور مختلف زبانوں کے ادباء اور شعراء کو قومی

مہاتما گاندھی کے افکار پر مبنی ادبی سرمایہ کو تحقیق کا موضوع بنایا جانا ضروری: پروفیسر بھیم ناتھ جھا

سی ایم کالج میں مہاتما گاندھی کے افکار و نظریات کے موضوع پر دو روزہ قومی سمینار شروع

دریچنگ: ۹ جنوری (عبدالستین قاسمی) بیانے قوم مہاتما گاندھی نے نہ صرف ہندوستان کی سیاسی تحریک کی قیادت کی اور ملک کو اگریزی حکومت سے نجات دلانے میں اہم کردار ادا کیا بلکہ ملک کے جملہ شعبہ حیات کو اپنیوں نے متاثر کیا اور خصوصی طور پر ہندوستانی ادب پر ان کے افکار و نظریات کے گہرے نقشہ بثت ہوئے ہیں۔ مذکورہ خیالات کا انتہا میتل ادب کے نامور ادب و شاعر پروفیسر بھیم ناتھ جھا نے کیا۔ پروفیسر جھا ایم کالج، دریچنگ میں ساہبیہ اکادمی قمی دہلی کے زیر انتظام منعقدہ دو روزہ قومی سمینار "مہاتما گاندھی: مخلص اور میتل" کے افتتاحی جلسے سے خطاب کر رہے تھے۔ انہوں نے کہا کہ گاندھی جی نے چھپارن سے جو تحریک شروع کی وہ پورے ہندوستان کے مخلص راہ ثابت ہوئی اور اس میں مخلص اپنے میتل کے عوام کا بڑا روپ رہا۔ گاندھی جی نے اس تقریباً دو درجہ اسکالر شاہل ہو رہے ہیں۔ کل مورخہ دس جنوری کو دو سیشن ہوں گے اور اختتامیہ اجلاس میں پروفیسر سریدھر کمار سنگھ و انس چانسلر لکٹ نرائے مختلا یو ٹیوریٹی، دریچنگ گاندھی جی اور چھپارن سینیٹر گرہ پر اپنا خصوصی مقالہ پیش کریں گے۔ شرکائے سمینار میں ڈاکٹر مسرا، کنویز میتل ایڈوائزری بورڈ نے کہا کہ گاندھی جی نے شروع میں سماج کے پڑھے لکھے طبقہ کو متاثر کیا یہیں بعد کے دنوں میں ان کا مقصد حیات عوام بن گیا کہا کہ ہاپاۓ قوم مہاتما گاندھی کی سوانح اور ان کی دیگر اتفاقیات بالخصوص صحافت کے مطالعے سے یہ حقیقت اپنی تحریروں میں جگد دینا شروع کیا۔ ڈاکٹر امنندھ سنگھ گاندھی اور مخلص اپنے کے موضوع پر روشنی ڈالی اور یہ ثابت کیا کہ میتل ادب میں ان پر بہت کچھ لکھا جانے گا اور مخلص اپنے کے سہارے اگریزی حکومت کو محصور کر دیا کر گیا ہے۔ ساہبیہ اکادمی کی پروگرام آفیسر محترمہ میخت کو رکھ لئے ہے۔ اس پر بہت کچھ لکھا گیا ہے۔ اس سینیٹر کی اہمیت و افادت پر روشنی ڈالی اور اس پر رسماً سمجھا گیا ہے۔



مہاتما گاندھی کے نظریات کو وقت کی اہم ضرورت بتایا۔ اپنے اگریزوں کے خلاف آواز اٹھانے کے لئے مخد کیا اور مختلف زبانوں کے ادباء اور شعراء کو قومی یونیورسٹی پر میں تعلیقات پیش کرنے کی گزارش کی، جس کا نتیجہ ہے کہ آج اردو، ہندی، میتل میں گاندھی کے گلہ و نظر پر بہت مواد کی کمی نہیں ہے۔ خاص کر میتل میں ان پر بہت کچھ لکھا گیا ہے لیکن افسوس کی بات ہے کہ وہ بکجا ہیں ہے اس لئے اب یونیورسٹیوں میں گاندھی لٹریچر کو بیکھرا کرنے اور بھادیے نے اس سینیٹر کی اہمیت و افادت پر حنایا ہے کیون

کہ آج ملک میں جس طرح کا احتیاط اپنادیا ہو گیا ہے ایسے وقت میں صرف اور سرف گاندھی کا راستہ ہی ملک کو ایک نیا راستہ دکھا سکتا ہے۔ افتتاحی جلسہ کی نکامات ڈاکٹر ابھیلاش نے کیا جب کہ رسم ٹکریب کی ادا گنجی ڈاکٹر رامنی رنجن صدر شعبہ میتل کی نے ادا کیا۔ افتتاحیہ جلسے کے بعد دو تین سیشن ہوئے۔ پہلے سیشن میں کیدار ناتھ جھا، نریش کمار ویکل، نریش ناتھ جھا نے مہاتما گاندھی کی شاعری اور میتل لٹریچر پر ان کے اثرات پر مطالعے پیش کئے۔ دوسرے سیشن کی صدارت پروفیسر کیرتی جھا نے کیا اور پروفیسر شیخ پر ساد یادو، ڈاکٹر ممتاز احمد اور ابھیلاش کماری نے اپنے مطالعے پیش کئے۔ ڈاکٹر احمد نے مہاتما گاندھی کی صحافت پر تفصیلی روشنی ڈالی اور ان کے پیغام کو عام کرنے میں ان کی صحافت کا کیا کردار تھا اس کا خلاصہ پیش کیا۔ واضح ہو کہ یہ دو روزہ سمینار 10-9 جنوری میں تقریباً دو درجہ اسکالر شاہل ہو رہے ہیں۔ کل مورخہ دس جنوری کو دو سیشن ہوں گے اور اختتامیہ اجلاس میں پروفیسر سریدھر کمار سنگھ و انس چانسلر لکٹ نرائے مختلا یو ٹیوریٹی، دریچنگ گاندھی جی اور چھپارن سینیٹر گرہ پر اپنا خصوصی مقالہ پیش کریں گے۔ شرکائے سمینار میں ڈاکٹر سریش پاسوان، ڈاکٹر رامنی رنجن، پروفیسر ناتھ جھا، ڈاکٹر نریش ناتھ جھا، پروفیسر کیدار ناتھ جھا، کے علاوہ کالج کے تمام اساتذہ و طلباء اور طالبات شامل تھے۔

महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष-प्रो० भीमनाथ झा

दरभंगा (ह०स०)। महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष हे, जिनके विचारों की प्रासादीगतता सार्वदेशिक व सार्वकालिक है। उनका व्यक्तित्व महान है। गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में मिथिला का महात्मा पूर्ण योगदान रहा है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में महत्वात् रहा है। गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है। उन्होंने मैथिली साहित्य के इनसाइट्सोंपाठ्यों का ज्ञाने वाले प्रोफेसर भीमनाथ झा ने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा सी एच

गांधी को महात्मा नाम से सम्बोधित किया था।

अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ मुख्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई महानों में महात्मा है। मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है। हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरे भाषा के साहित्य को भी पढ़ना समझना चाहिए। भारत की कोई भी भाषा नहीं है, जिसमें गांधी दर्शन ना हो। गांधी दर्शन मानवता की रक्षा हेतु सदा प्रसादीक है।

साहित्य अकादमी के कार्यक्रम



कालिन, दरभंगा के संयुक्त उत्तराखण्ड में महाविद्यालय में 'महात्मा गांधी : मिथिला और मैथिली (विशेष मंडर्प : चंपारण) विषयक टो दिवसीय संगोष्ठी में उत्पाटन बहुत रुचि के साथ में कहा। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आज गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर संधि करने की सक्षमता उत्पन्न है, तभी गांधीचारित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। इस कार्य में आनंदचन्द्र-समानंदचन्द्र आवश्यक है, क्योंकि आनंदचन्द्र ही व्यक्तित्व की वास्तविक कमीटी होता है।

साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ प्रेम गोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दर्शा देते रहा है। भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष में मिथिला का महात्मा पूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भय पड़ा है। मैथिली साहित्य रामकृष्ण के बाद गांधी को विषय का तुलीय अवतार मानता है। चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि मैं एक जनक की भूमि चंपारण लोग था, जहाँ उन्होंने माय और अहिंसा के बल पर अपने अद्वितीय को जनआंदेशन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी। गांधी विषय के नेता तथा भारत के जाता थे। मिथिला में ही

अधिकारी मनवीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है। गांधी की दोहरी सौ वर्षों की वर्षगांठ के अवसर पर ऐसे अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य नई पीढ़ी को गांधी से अचलत कराना है। पुण्य आज पश्चात प्रभाव में आ रहे हैं, जिन्हें हम गांधी जैसे महात्माओं की जीवनी की जानकारी दे रहे हैं। साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ अमरेंद्र सोन्दर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्राप्त; विषय के सभी देशों पर पड़ा है। मिथिला सम्बाज गांधी को आत्मसात किया है। मैथिली साहित्य के प्राप्त; सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है। गांधी के मिथिला आगमन से सेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रखना चाह विनियोग चली आ रही है। गांधी आधारित समृद्ध मैथिली साहित्य का संकलन होना आवश्यक है।

इस अवसर पर प्रोफेसर प्रीति झा, डॉ अशोक कुमार मेहता, डॉ शिवप्रसाद यादव, प्रो रमेश झा, डॉ नरेश कुमार विकल, डॉ पूलचंद मिश्र रमन, डॉ मुरेंद भारद्वाज, स्वीटी कुमारी, डॉ योगनंद झा, डॉ भागवत मंडल, रीषन कुमार यादव, प्रोफेसर विश्वनाथ झा, डॉ पी के चौधरी, डॉ मुरेश यासवान, डॉ आर एन चौरसिया महित एक सी में अधिक विचारक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित हैं। कार्यक्रम का संचालन प्रो अभिलाषा कुमारी तथा धनवान जापन मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो रामनी रंजन ने किया।